पत्र सूचना शाखा
**(मुख्यमंत्री सूचना परिसर)**
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

# मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड महोत्सव–2026 में सम्मिलित हुए, 'उत्तराखण्ड दर्पण' स्मारिका का विमोचन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अवलोकन किया

## प्रो0 विजय प्रसाद डिमरी तथा श्रीमती वीणा तिवारी 'उत्तराखण्ड गौरव सम्मान–2026' से सम्मानित

## लखनऊ में आयोजित उत्तराखण्ड महोत्सव में अवध की समृद्ध संस्कृति और देवभूमि की गौरवशाली परम्पराओं का अद्भुत संगम देखने को मिलता : मुख्यमंत्री

## महोत्सव में लगाए गए स्टॉल उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक विशेषताओं और पारम्परिक खान–पान को प्रदर्शित करने के साथ नई पीढ़ी को जड़ों से जोड़ने का माध्यम बन रहे

## पं0 गोविन्द बल्लभ पंत उपवन उत्तराखण्ड के कार्यक्रमों के लिए उपलब्ध रहेगा

## उत्तराखण्ड महापरिषद पिछले 78 वर्षों से प्रदेश की राजधानी लखनऊ में उत्तराखण्ड महोत्सव का आयोजन कर रही

## भारत के प्रथम चीफ ऑफ डिफेन्स स्टाफ जनरल बिपिन रावत का देश की रक्षा एवं सुरक्षा में योगदान अविस्मरणीय, जनरल अनिल चौहान ने सैन्य सेवाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोभाल का जन्म उत्तराखण्ड में हुआ

## उत्तराखण्ड का युवा भगवान श्रीराम के संकल्प से प्रेरणा लेकर विषम परिस्थितियों में भी देश की सीमाओं की रक्षा के लिए तत्पर रहता

## प्रधानमंत्री जी द्वारा मोटे अनाज व मिलेट्स को प्रोत्साहित किए जाने के बाद आज लोग पारम्परिक अनाजों के महत्व को समझते

## उत्तराखण्ड के पारम्परिक व्यंजन पूरी तरह ऑर्गेनिक, विटामिन और प्रोटीन से भरपूर

## विकसित भारत का निर्माण प्रत्येक भारतीय नागरिक का दायित्व होना चाहिए

**लखनऊ : 11 नवम्बर, 2026**

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा कि उत्तराखण्ड महोत्सव का लखनऊ में विशेष महत्व है, क्योंकि यहां अवध की समृद्ध संस्कृति और देवभूमि उत्तराखण्ड की गौरवशाली परम्पराओं का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। दोनों संस्कृतियों का यह मिलन प्रत्येक व्यक्ति के अन्तर्मन को स्पर्श करता है और उसे अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति गौरव की अनुभूति कराता है।

मुख्यमंत्री जी आज यहां उत्तराखण्ड महापरिषद द्वारा आयोजित उत्तराखण्ड महोत्सव–2026 में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने भगवान श्री बद्री विशाल की आरती कर प्रदेश एवं देश की सुख–समृद्धि की कामना की। मुख्यमंत्री जी ने उत्तराखण्ड की दो महान विभूतियों, पद्मश्री से अलंकृत भौतिक वैज्ञानिक प्रो0 विजय

प्रसाद डिमरी तथा लोकगायिका श्रीमती वीणा तिवारी को 'उत्तराखण्ड गौरव सम्मान–2026' से सम्मानित किया। उन्होंने 'उत्तराखण्ड दर्पण–2026' स्मारिका का विमोचन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अवलोकन किया।

मुख्यमंत्री जी ने उत्तराखण्ड महोत्सव एवं भाई दूज की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि किसी भी समाज के विकास की पहली शर्त अपने अतीत के गौरव का बोध होना है। अतीत अपने साथ वर्तमान को लेकर चलता है और हमारे वर्तमान के वाहक हमारी लोककला, लोकपरम्परा, लोकगायन, लोककलाकार तथा खानपान की विशिष्टताएं होती हैं। उत्तराखण्ड महापरिषद ने इन परम्पराओं को संरक्षित रखने के साथ ही उन्हें आगे बढ़ाने का सराहनीय कार्य किया है। महोत्सव में लगाए गए विभिन्न स्टॉल उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक विशेषताओं और पारम्परिक खान–पान को प्रदर्शित करने के साथ ही नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का माध्यम बन रहे हैं।

मुख्यमंत्री जी ने उत्तराखण्ड महापरिषद को आश्वस्त किया कि पं0 गोविन्द बल्लभ पंत उपवन उत्तराखण्ड के कार्यक्रमों के लिए उपलब्ध रहेगा। यहां महापरिषद के कार्यक्रम निरन्तर आयोजित होते रहेंगे। उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने में किसी प्रकार की बाधा नहीं आने दी जाएगी। उत्तराखण्ड महापरिषद के ऐसे आयोजन निरन्तर होते रहने चाहिए, ताकि नई पीढ़ी अपनी परम्पराओं से जुड़ी रहे।

आज इस मंच पर उत्तराखण्ड की दो महान विभूतियों को सम्मानित करने का अवसर प्राप्त हुआ है। प्रोफेसर विजय प्रसाद डिमरी उत्तराखण्ड के चमोली जनपद की माटी से निकले देश के मूर्धन्य भौतिक वैज्ञानिक हैं। वे सी0एस0आई0आर0–एन0जी0आर0आई0 के पूर्व निदेशक हैं। वहीं, अल्मोड़ा की माटी से निकलीं सुप्रसिद्ध लोकगायिका श्रीमती वीणा तिवारी ने अपनी गायन से उत्तराखण्ड की लोककला एवं लोकगाथाओं को देश–दुनिया तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री एवं महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं0 गोविन्द बल्लभ पंत जी द्वारा स्थापित उत्तराखण्ड महापरिषद पिछले 78 वर्षों से प्रदेश की राजधानी लखनऊ में उत्तराखण्ड महोत्सव का आयोजन कर रही है। इस दौरान अनेक विषम परिस्थितियों और चुनौतियों का सामना करते हुए महापरिषद ने उत्तराखण्ड की लोकपरम्पराओं, लोकसंस्कृति, लोकगायन, खान–पान, रीति–रिवाजों एवं सांस्कृतिक विरासत को वर्तमान पीढ़ी तक पहुंचाने तथा भावी पीढ़ी को इनसे प्रेरणा देने का निरन्तर कार्य किया है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश के विकास में उत्तराखण्ड की अनेक महान विभूतियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पं0 गोविन्द बल्लभ पंत, स्व0 हेमवती नन्दन बहुगुणा, स्व0 नारायण दत्त तिवारी और श्री के0सी0 पंत जैसी महान विभूतियों की एक लम्बी श्रृंखला है। इनमें से प्रथम तीन विभूतियों ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दीं। उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड दोनों राज्यों के मुख्यमंत्री रहे

स्व0 नारायण दत्त तिवारी जी की इस वर्ष जन्म शताब्दी भी है। उन्होंने इन सभी महान विभूतियों की स्मृतियों को नमन करते हुए उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।

उत्तराखण्ड केवल प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिक विरासत की भूमि नहीं, बल्कि राष्ट्रभक्ति, त्याग, साहस और बलिदान की भी गौरवशाली भूमि है। उत्तराखण्ड ने देश को अनेक महान स्वतंत्रता सेनानी, सैनिक, सैन्य अधिकारी और राष्ट्रसेवक दिए हैं। वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि ब्रिटिश शासन के दौरान जब निर्दोष हिंदुस्तानियों पर गोली चलाने का आदेश दिया गया, तब वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली जी ने गोली चलाने से इनकार कर दिया था। उन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए अदम्य साहस और त्याग का परिचय दिया। इसके लिए उन्हें दण्डित भी किया गया, लेकिन उन्होंने अपने संकल्प से समझौता नहीं किया। यह मातृभूमि के प्रति समर्पण और राष्ट्रभक्ति की अनुपम मिसाल है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि भारत के प्रथम चीफ ऑफ डिफेन्स स्टाफ जनरल बिपिन रावत का देश की रक्षा एवं सुरक्षा में योगदान अविस्मरणीय है। जनरल अनिल चौहान ने भी देश की सैन्य सेवाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। देश के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोभाल का जन्म भी उत्तराखण्ड में हुआ। उत्तराखण्ड की सैनिक परम्परा इतनी समृद्ध है कि वहां लगभग प्रत्येक परिवार का कोई न कोई सदस्य सेना में सेवा करता है। वहां के युवाओं की प्राथमिकता सेना में जाकर देश की सीमाओं की रक्षा के लिए स्वयं को समर्पित करना होती है।

भगवान श्रीराम ने 'निसिचर हीन करहुँ, महि भुज उठाई पन कीन्ह' का संकल्प लिया था। उत्तराखण्ड का युवा भगवान श्रीराम के इसी संकल्प से प्रेरणा लेकर विषम परिस्थितियों में भी देश की सीमाओं की रक्षा के लिए तत्पर रहता है। जब देश की सुरक्षा का प्रश्न सामने आता है तो उत्तराखण्ड, अरुणाचल प्रदेश अथवा राजस्थान की सीमा का कोई भेद नहीं रहता। देश के सामने आने वाली प्रत्येक चुनौती हम सभी की सामूहिक चुनौती होती है और उसका मुकाबला भी मिलकर करना होता है।

देवभूमि उत्तराखण्ड की अस्मिता, वहां की संस्कृति और वहां के लोगों के सम्मान के प्रति प्रत्येक व्यक्ति को संवेदनशील होना चाहिए। उत्तराखण्ड के निवासियों को घुसपैठियों की संज्ञा देने जैसी टिप्पणियां संकीर्ण मानसिकता का परिचायक हैं। उन्होंने बांग्लादेशी एवं पाकिस्तानी घुसपैठियों के प्रति सहानुभूति रखने वालों और देवभूमि के लोगों के प्रति अपमानजनक भाषा का प्रयोग करने वालों की मानसिकता पर सवाल उठाए।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि माँ गंगा और यमुना के साथ सरयू, राप्ती और रामगंगा जैसी पवित्र नदियों का सम्बन्ध इसी देवभूमि से है। ऐसी पवित्र भूमि के प्रति संकीर्ण सोच रखना उचित नहीं है। जो लोग घुसपैठियों के प्रति सहानुभूति रखते हैं, माफियाओं के सामने झुकते हैं और देवभूमि के निवासियों के प्रति विषवमन करते हैं, उनकी संवेदना

लोकपरम्परा, लोकसंस्कृति और लोकआस्था के प्रति नहीं हो सकती। समाज को ऐसी विभाजनकारी मानसिकता से सावधान रहना चाहिए।

मुख्यमंत्री जी ने उत्तराखण्ड से जुड़े लोगों को आश्वस्त करते हुए कहा कि सरकार उनके साथ है। उन्हें घबराने की आवश्यकता नहीं है। उत्तराखण्ड महापरिषद के कार्यक्रम निरन्तर आयोजित होते रहने चाहिए और उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक परम्पराओं को आगे बढ़ाने का कार्य निर्बाध रूप से जारी रहना चाहिए।

मुख्यमंत्री जी ने उत्तराखण्ड के पारम्परिक खान–पान और स्थानीय उत्पादों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि वहां के पारम्परिक व्यंजन पूरी तरह ऑर्गेनिक हैं तथा विटामिन और प्रोटीन से भरपूर हैं। इनमें प्राकृतिक ऊर्जा के साथ अनेक औषधीय गुण भी विद्यमान हैं। लेकिन उचित ब्राण्डिंग, प्रचार–प्रसार और वैज्ञानिक शोध के अभाव में इनकी विशेषताओं को व्यापक पहचान नहीं मिल पाई है। इनकी पौष्टिकता एवं उपयोगिता पर वैज्ञानिक शोध को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा मोटे अनाज व मिलेट्स को प्रोत्साहित किए जाने के बाद आज लोग कोदो, झंगोरा और अन्य पारम्परिक अनाजों के महत्व को समझने लगे हैं। उत्तराखण्ड के पारम्परिक व्यंजनों को उचित ब्राण्डिंग एवं प्रचार–प्रसार के माध्यम से देश–दुनिया तक पहुंचाया जाना चाहिए। उत्तराखण्ड महोत्सव में मंडुवा, झंगोरा और चौलाई जैसे पारम्परिक व्यंजनों के स्टॉल लगाए गए हैं। इससे लोगों को उत्तराखण्ड के खान–पान की विविधता से परिचित होने का अवसर मिल रहा है और नई पीढ़ी को इन पारम्परिक व्यंजनों से जोड़ने का कार्य भी हो रहा है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने 'वन डिस्ट्रिक्ट–वन कुज़ीन' अर्थात 'एक जनपद–एक व्यंजन' का अभियान प्रारम्भ किया है। 'एक जनपद–एक उत्पाद' की तर्ज पर प्रदेश के स्थानीय एवं पारम्परिक व्यंजनों को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके माध्यम से स्थानीय खान–पान को नई पहचान देने और उसकी सम्भावनाओं को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री जी ने उत्तराखण्ड से जुड़े संगठनों से आग्रह किया कि वे अपने कार्यक्रमों में उत्तराखण्ड के लोककलाकारों को आमंत्रित करें तथा उन्हें उचित मंच प्रदान करें। उत्तर प्रदेश के स्थानीय एवं नवोदित कलाकारों को भी उनके साथ जोड़ें, ताकि वे एक–दूसरे की कला, संस्कृति और परम्पराओं को समझ सकें। इससे दोनों प्रदेशों के कलाकारों को सीखने, जानने और अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने के नए अवसर मिलेंगे।

मुख्यमंत्री जी ने उत्तराखण्ड की धार्मिक एवं आध्यात्मिक विरासत का उल्लेख करते हुए कहा कि उत्तराखण्ड को देवभूमि यूं ही नहीं कहा जाता। गंगोत्री से माँ गंगा और यमुनोत्री से मां यमुना की पवित्र धाराएं निकलती हैं। यह नदियां पूरे उत्तर भारत को जीवन प्रदान करती हैं और यहां की भूमि को उर्वरता एवं समृद्धि देती हैं। उत्तराखण्ड में

केदारनाथ, बद्री विशाल, पंचकेदार और पंचप्रयाग जैसे महत्वपूर्ण तीर्थस्थल हैं। विष्णुप्रयाग, नन्दप्रयाग, कर्णप्रयाग, रुद्रप्रयाग और देवप्रयाग में नदियों का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। प्रत्येक प्रयाग में दो नदियों का संगम अपनी विशिष्ट आध्यात्मिक ऊर्जा और प्राकृतिक महत्ता के कारण विशेष महत्व रखता है।

मुख्यमंत्री जी ने बाबा नीब करौरी के धाम कैंची धाम को आस्था का महत्वपूर्ण केन्द्र बताते हुए कहा कि चितई के गोलू देवता को न्याय के देवता के रूप में श्रद्धा के साथ पूजा जाता है। वहां अपनी पीड़ा लेकर पहुंचने वाले श्रद्धालुओं की प्रार्थना और आस्था का विशेष महत्व है। नन्दा देवी का पवित्र धाम और उनकी यात्रा उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परम्परा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। अलकनंदा की वेगवती धारा से जुड़ा माँ धारी का पावन स्थल, जौनसार–बावर क्षेत्र में महासू देवता की दिव्य छत्रछाया तथा सेम मुखेम में नागराजा की कृपा उत्तराखण्ड की धार्मिक आस्था को विशिष्ट पहचान प्रदान करती है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि तुंगनाथ, मध्यमहेश्वरनाथ, कल्पेश्वरनाथ, रुद्रनाथ और जागेश्वर धाम जैसे तीर्थस्थल सदियों से भारत की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना को नई ऊंचाई प्रदान करते रहे हैं। जब साधनों का अभाव था, तब भी यह धाम भारत की आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण केन्द्र बने हुए थे। आज भी यह तीर्थस्थल अपनी परम्पराओं के साथ आगे बढ़ रहे हैं। उत्तराखण्ड की यह धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत केवल उत्तराखण्ड तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे देश की साझा धरोहर है। इसे संरक्षित रखना और नई पीढ़ी तक पहुंचाना हम सभी का दायित्व है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के समय में उत्तराखण्ड राज्य का गठन किया गया था। इससे पहले उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड एक ही राज्य का हिस्सा थे। आज उत्तराखण्ड विकास की नई ऊंचाइयों को छूते हुए आगे बढ़ रहा है। उन्होंने उत्तराखण्ड के विकास में योगदान देने वाले पूर्व मुख्यमंत्रियों स्व0 नित्यानंद स्वामी, स्व0 नारायण दत्त तिवारी, स्व0 मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूड़ी, श्री हरीश रावत, श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत, डॉ0 रमेश पोखरियाल 'निशंक', श्री तीरथ सिंह रावत तथा वर्तमान मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी के योगदान का उल्लेख किया।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में उत्तराखण्ड विकास और विरासत की नई ऊंचाइयों को छूते हुए आगे बढ़ रहा है। उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड की साझा विरासत और विकास की सम्भावनाओं को आगे बढ़ाने के लिए आपसी सहयोग को और मजबूत करना आवश्यक है।

प्रधानमंत्री जी ने पंच प्रण के माध्यम से प्रत्येक भारतीय नागरिक को विकसित भारत के निर्माण में अपनी भूमिका निभाने का आह्वान किया है। यदि उत्तराखण्ड के धाम हमारी विरासत हैं, तो उत्तर प्रदेश और देश के अन्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थल भी हमारी साझा विरासत हैं। अयोध्या, काशी, मथुरा–वृंदावन, प्रयागराज, मां विंध्यवासिनी धाम, माँ

शाकुम्भरी धाम और नैमिषारण्य जैसे पवित्र स्थल हमारी सांस्कृतिक पहचान हैं। इन सभी धरोहरों का संरक्षण और उन्हें मजबूती के साथ आगे बढ़ाना हमारा दायित्व है।

मुख्यमंत्री जी ने 'उत्तराखण्ड दर्पण' स्मारिका के विमोचन का उल्लेख करते हुए कहा कि इसे 'विकसित भारत–विकसित उत्तर प्रदेश' की थीम पर आधारित किया गया है। वास्तव में विकसित भारत का निर्माण प्रत्येक भारतीय नागरिक का दायित्व होना चाहिए। यह राष्ट्र रूपी यज्ञ है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक परिवार को अपनी सामर्थ्य के अनुसार योगदान देना होगा। प्रधानमंत्री जी ने विकसित भारत के संकल्प को साकार करने के लिए प्रत्येक नागरिक को पांच प्रणों से जुड़ने का आह्वान किया है। ये पंच प्रण प्रत्येक भारतीय के जीवन का हिस्सा बनने चाहिए।

मुख्यमंत्री जी ने इन पंच प्रणों का उल्लेख करते हुए कहा कि पहला प्रण अपनी विरासत पर गौरव की अनुभूति करना है। उत्तराखण्ड और उत्तर प्रदेश दोनों ही धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध हैं। अयोध्या, काशी, मथुरा–वृंदावन, प्रयागराज सहित देश के सभी प्रमुख धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों का संरक्षण करना और अपनी विरासत को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाना प्रत्येक नागरिक का दायित्व है।

दूसरा प्रण गुलामी के अंशों और गुलामी की मानसिकता को पूरी तरह समाप्त करना है। जो कुछ हमारे हित में, हमारे समाज और देश के हित में है, हमें वही स्वीकार करना चाहिए। गुलामी के प्रतीकों को स्वीकार करने के बजाय देश के स्वाभिमान एवं गौरव को प्राथमिकता देनी चाहिए। तीसरा प्रण अपनी सेना और वर्दीधारी बलों के प्रति गौरव एवं सम्मान की अनुभूति करना है। देश की सीमाओं की रक्षा करने वाले सैनिकों, देश के भीतर शांति एवं कानून–व्यवस्था बनाए रखने वाले सुरक्षा बलों तथा शहीद जवानों के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रत्येक नागरिक के जीवन का हिस्सा होना चाहिए।

चौथा प्रण सामाजिक सौहार्द और एकता का है। समाज को जाति, क्षेत्र और भाषा के नाम पर बांटने वाली ताकतों से सावधान रहने की आवश्यकता है। समाज में विभाजन पैदा करने वाले किसी भी प्रयास को सफल नहीं होने देना चाहिए। सामाजिक एकता और सद्भाव ही राष्ट्र की मजबूती का आधार हैं। पांचवां प्रण नागरिक कर्तव्यों के निर्वहन का है। प्रत्येक व्यक्ति जिस क्षेत्र में कार्य कर रहा है, वहां अपने दायित्वों का ईमानदारी और निष्ठा के साथ निर्वहन करे। जब प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति सजग होगा, तभी विकसित भारत और विकसित उत्तर प्रदेश का संकल्प साकार हो सकेगा।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि इन पंच प्रणों को केवल विचार तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि इन्हें अपने जीवन की कार्यशैली का हिस्सा बनाना चाहिए। प्रत्येक भारतीय नागरिक जब अपनी जिम्मेदारियों का ईमानदारी से निर्वहन करेगा, तभी राष्ट्र रूपी यज्ञ में उसका वास्तविक योगदान सुनिश्चित होगा।

मुख्यमंत्री जी ने उत्तर प्रदेश में आए बदलावों का उल्लेख करते हुए कहा कि एक समय उत्तर प्रदेश को बीमारू राज्य के रूप में जाना जाता था, लेकिन आज प्रदेश देश की अर्थव्यवस्था के शीर्ष तीन राज्यों में शामिल है। यह परिवर्तन निरन्तर प्रयासों, ईमानदार कार्यशैली और विकास के प्रति प्रतिबद्धता का परिणाम है। उत्तर प्रदेश ने विकास और अपनी सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने के साथ ही अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति की है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़कर देश की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हुई है।

तीन दिन पूर्व अयोध्या में आयोजित दीपोत्सव का भव्य आयोजन सभी ने देखा होगा। पिछली सरकारों के समय अयोध्या में बिजली और स्वच्छता की स्थिति अच्छी नहीं थी। वहां गन्दगी और अन्धकार की स्थिति थी, लेकिन आज अयोध्या प्रकाश से जगमगा रही है। आज हम उजाले में रहते हैं और स्वच्छता को प्राथमिकता देते हैं। अयोध्या के साथ काशी भी जगमगा रही है तथा प्रदेश में भव्य एवं दिव्य कुम्भ जैसे आयोजन हो रहे हैं।

प्रदेश में पहले प्रत्येक जनपद में माफियाओं का वर्चस्व हुआ करता था, लेकिन आज माफिया अपनी प्रभावशीलता खो चुके हैं। यह शासन की ईमानदार कार्यशैली, मजबूत कानून–व्यवस्था और निरन्तर प्रयासों का परिणाम है। किसी भी व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए ईमानदारी से प्रयास करना आवश्यक है। जब हम अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करते हैं, तो प्रकृति और परमात्मा भी हमारा सहयोग करते हैं।

मुख्यमंत्री जी ने उत्तराखण्ड महोत्सव के सफल आयोजन के लिए उत्तराखण्ड महापरिषद के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि डबल इंजन सरकार उत्तराखण्ड से जुड़े सभी लोगों के साथ है। उनके हितों का हर प्रकार से संरक्षण किया जाएगा और आवश्यक सहयोग भी प्रदान किया जाएगा।

कार्यक्रम को उत्तराखण्ड महापरिषद के अध्यक्ष श्री हरीश चन्द्र पंत ने भी सम्बोधित किया।

इस अवसर पर विधायक श्री ओ0पी0 श्रीवास्तव, पूर्व मंत्री एवं पूर्व सांसद प्रो0 रीता बहुगुणा जोशी, सलाहकार मुख्यमंत्री श्री अवनीश कुमार अवस्थी सहित उत्तराखण्ड महापरिषद के पदाधिकारी, सदस्य एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

————————

***PN-CM-Uttrakhand Mahotsav-11 November, 2026***